बन्द दरवाजे

श्यामलाल का परिवार सुखी परिवारों में गिना जाता था । रात को काम पर से लौटने के बाद दोनों बेटों व बड़ी बहू के साथ खाना खाते समय टी.वी.आन कर लेते । सब मिल कर टी.वी.देखते हुए दिन भर के दुख –सुख व समाचारों का आदान –प्रदान देर तक करते रहते । श्यामलाल को सेवानितवृत्ति तथा पत्नी विछोह के बावजूद कभी भी अकेलेपन का एहसास नही हुआ ।

छोटे पुत्र की शादी हुई । दहेज में अन्य सामान के साथ रंगीन टी.वी.भी आया । श्यामलाल बच्चों के साथ चर्चा करने वाले थे कि दो टी.वी. का घर में क्या करेगे ? पुराना टी.वी.बेचकर नया रख लेगे । उनका विचार बाहर आ पाता उससे पूर्व छोटी बहू के कमरे से नये टी.वी की आवाज बाहर आ गयी । खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है । एक दिन बड़ा पुत्र भी अपने लिये नया टी.वी. ले आया । अब खाना भी उनके कमरे में जाने लगा ।

एक रात अचानक श्यामलाल के सीने में जोर का दर्द उठा । शरीर पसीने से भींग गया । हाथ पांव कांपने लगे । घबराहट बढने लगी तो पानी पीने के लिये उठे । पैरों ने साथ नही दिया । लड़खड़ा कर गिर पड़े । दोनो पुत्रो को आवाज लगाई । बन्द दरवाजे से आती धारावाहित तथा पांप संगीत की मिलीजुली आवाजों में उनकी आवाज खो गयी ।

सुरेश शर्मा